https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI06.018

सालारजंग संग्रहालयः एक सांस्कृतिक धरोहर

श्रीमती नेहा
शोधार्थिनी
ललित कला विभाग
मेरठ कॉलेज, मेरठ

प्रो0 अंजू चौधरी
ललित कला विभाग
मेरठ कॉलेज, मेरठ

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 12.05.26
Approved: 28.06.26

श्रीमती नेहा
प्रो0 अंजू चौधरी

सालारजंग संग्रहालयः एक सांस्कृतिक धरोहर

Vol. XVII, Sp. Issue June.2026
Article No.18, Pg. 143-152

Similarity Check: 02%

Online available at
https://anubooks.com/special-issues?url=jgv-si-rbd-bijnor-june-2026

DOI: *https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI06.018*

सारांश

सग्रंहालय एक संस्थान होता है जो कलात्मक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक या वैज्ञानिक महत्व की कृतियों और अन्य वस्तुओं के संग्रह का प्रदर्शन करता है, साथ ही उनका रख–रखाव तथा देखभाल करता है। बहुत से सार्वजनिक संग्रहालय उपरोक्त सभी को प्रदर्शित करते हुए जनता को देखने के लिए उपलब्ध कराते है जो स्थायी या अस्थायी हो सकते हैं।[1] आई.सी.ओ. के अनुसार–"संग्रहालय समाज की सेवाओं और विकास में एक गैर लाभकारी स्थायी संस्था होती है, जो जनता के लिए खुला रहता है जिसका उद्देश्य अधिग्रहण, संरक्षण, शोध एवं संचार का प्रदर्शन है।" आजकल संग्रहालय एक ऐसी संस्था के रूप में जाने जाते हैं जो मूल सामग्रियों के माध्यम से प्राचीन और गौरवशाली अतीत को संरक्षित करने के अतिरिक्त आगे आने वाली पीढ़ियों एवं आगन्तुकों को उन्हें समझाने एवं आनन्द देने के लिए प्रेरित करते हैं।"

**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of JGV.*

आज संग्रहालय एक कार्यशाला है जहाँ प्रयोग किये जाते हैं। एक विद्यालय जहाँ सिखाया जाता है। एक उच्च शिक्षण संस्थान और सांस्कृतिक आनन्द की जगह जहाँ आगंतुक रोजमर्रा की जिदंगी व्यक्तिगत चिंताओं को छोड़कर आराम व आनन्द का अनुभव कर सकता है।

अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय परिषद के अनुसार 202 देशों के 55000 से अधिक संग्रहालय हैं।[2] भारत में भी कई प्रसिद्ध संग्रहालय हैं जो कला, इतिहास, विज्ञान और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को प्रदर्शित करते हैं। भारत में 14,733 से अधिक संग्रहालय है। उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक 2152, महाराष्ट्र में 1478 और पश्चिमी बंगाल में 1217 संग्रहालय हैं।[3] भारत में पहला संग्रहालय सदी की शुरुआत में कोलकाता में खोला गया था। तमिलनाडु में पहला सरकारी संग्रहालय चेन्नई में 1857 में खोला गया।

सालारजंग संग्रहालय

सालारजंग संग्रहालय भारत के तेलंगाना राज्य के हैदराबाद शहर में मूसी नदी के दक्षिणी तट पर दार–उल–शिफा नामक स्थान में स्थित एक कला संग्रहालय है। यह भारत के उल्लेखनीय राष्ट्रीय संग्रहालयों में से एक है।[4] साथ ही सालारजंग दुनिया के बड़े निजी संग्रहों में से एक है। यह विश्व की विभिन्न सभ्यताओं के बहुमूल्य संग्रहों के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है। विश्व विख्यात होते हुए भी संग्रहालय के संस्थापकों के बारे में लोगों को बहुत कम जानकारी है। हालाँकि इसकी शुरुआत करने का श्रेय सालारजंग परिवार को जाता है और संग्रह को एकत्र करने का सम्पूर्ण श्रेय सालारजंग तृतीय को ही जाता है। सालारजंग परिवार दक्कन के इतिहास में सबसे प्रतिष्ठित परिवारों में से एक था जिसके 5 सदस्य तत्कालीन निज़ाम शासन में प्रधानमंत्री रहे।[5]

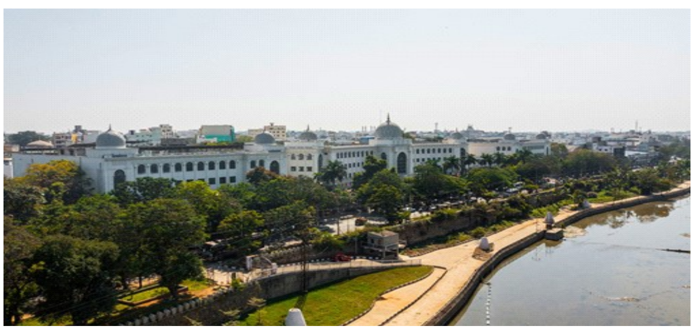

सालारजंग संग्रहालय, सालारजंग के परिवार द्वारा न केवल बनाया गया वरन् समृद्ध और विविध संग्रह से विकसित हुआ है जिन्होंने भारत और दुनिया के विभिन्न हिस्सो से कला एवं संस्कृति की विभिन्न वस्तुओं को अधिग्रहीत किया है। संग्रह का प्रमुख हिस्सा निःसंदेह मीर युसूफ अली खान द्वारा बनाया गया था। जिसे लोकप्रिय रूप से सालारजंग तृतीय के नाम से जाना जाता है।

हैदराबाद के सातवें निजाम और उनके पहले प्रधानमंत्री, नवाब मीर युसूफ अली खान सालारजंग तृतीय (1889–1949) द्वारा उनके जीवन की महत्वाकांक्षा के रूप में दुनिया भर से एकत्र की गई 35 वर्षों की कड़ी मेहनत का परिणाम यह सालारजंग संग्रहालय है। नवाब सालारजंग तृतीय अपनी वस्तुओं को व्यवस्थित करने के लिए ख्वाजा पहाड़ी पर मीर अलार्म टैंक या मौला अली, (हैदराबाद) में एक स्थायी भवन का निर्माण करना चाहते थे या कभी–कभी वह पूना या ऊटी में एक भव्य इमारत का निर्माण करने के विषय में सोच–विचार करते थे। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए सालारजंग तृतीय ने विभिन्न योजनाओं पर काफी राशि खर्च की और नवाब जैन यार जंग जैसे कई वास्तुकारों से सलाह भी ली। उनके पैतृक दीवान देवड़ी महल में रखे गये संग्रह को पहले एक निजी संग्रहालय के रूप में प्रदर्शित किया गया, जिसका उद्घाटन 1951 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने किया था। बाद में 1968 में संग्रहालय अफज़लगंज स्थित अपने वर्तमान भवन में स्थानान्तरित कर दिया गया।

https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI06.018

पहले सालारजंग, नवाब तुराब अली खान का जन्म 2 जनवरी 1829 को हुआ था इनका पालन पोषण और शिक्षा हैदराबाद में हुआ था। 13 वर्ष की आयु में उन्हें सालारजंग की उपाधि दी गयी थी। 1853 में 24 वर्ष की उम्र में वे हैदराबाद राज्य के 'दीवान' (प्रधानमंत्री) बने वह 30 साल तक दीवान के पद पर आसीन रहे। नवाब तुराब अली खान को हैदराबाद के निजाम द्वारा 19वीं सदी में सालारजंग की उपाधि के अतिरिक्त 'मुख्तार–उन–मुल्क' एवं 'शुजा–उद–दोला' जैसी उपाधियों से भी नवाजा गया था।

सालारजंग भारतीय राज्य के सबसे कुशल दीवानों में से एक था एक महान सुधारक, प्रशासक और कला प्रेमी, इन्हें भारत एवं विदेशों दोनों में काफी पसंद किया गया। महारानी विक्टोरिया ने उन्हें KCI (Knight Commander of India) और GOSI (Governer of the order of the star of India) जैसे प्रतिष्ठित सम्मान से सम्मानित किया। इन्होंने अपनी यूरोप और इंग्लैण्ड की यात्राओं के दौरान कीमती वस्तुओं का संग्रह शुरू किया था। विश्व प्रसिद्ध संगमरमर की मूर्ति वेल्ड रेबेका (Veiled Rebecca) 1876 में रोम में सालारजंग प्रथम द्वारा ही खरीदी गई थी। इनका देहान्त 54 वर्ष की आयु में सन् 1883 को हुआ था।[6]

सालारजंग तृतीय को दुनिया भर में एक प्राचीन पुरा वस्तुओं के पारखी एवं ज्ञानी संग्रहकर्ता के रूप में जाना जाने लगा। संग्रहालय में संग्रह का बड़ा हिस्सा सालारजंग III द्वारा ही अधिग्रहीत किया गया था। इन्हीं के नाम पर संग्रहालय का नाम रखा गया था। सालारजंग तृतीय न केवल प्राचीन वस्तुओं का एक महान संग्रहकर्ता था बल्कि कवियों, लेखकों, एवं कलाकारों का संरक्षक भी था। उन्होंने उत्साहपूर्वक खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहित किया।

2 मार्च 1949 को 60 वर्ष की आयु में इनकी मृत्यु हो गयी। मृत्यु के उपरान्त वह अपने पीछे दुर्लभ विविध कला की वस्तुओं, पाण्डुलिपियों और चित्रों का एक अमूल्य संग्रह छोड़ गये। इनकी मृत्यु के उपरान्त इनके वंशजों की अनुपस्थित में भारत सरकार के विशेष अध्यादेश के द्वारा सालारजंग स्टेट के प्रशासन के लिए एक समिति नियुक्त की गयी। श्री पी0वी0 सुब्बा राव को इनकी सम्पत्ति का प्रशासन देखने के लिये अध्यक्ष के रूप में सरकार द्वारा नियुक्त किया गया था। इसी समिति के एक सदस्य स्वर्गीय प्रोफेसर हुसैन अली खान उस्मानिया विश्वविद्यालय के रीडर थे दूसरे सदस्य नवाब साहिब और श्री एम0 के0 वेलोदी थे जो हैरदाबाद के तत्कालीन मुख्यमंत्री थे, जिन्होंने सरकार एवं सालारजंग स्टेट समिति को सुझाव भी दिया था कि कला के इस अनमोल खजाने को सुरक्षित एवं संरक्षित किया जाना आवश्यक है।[7] स्टेट समिति का सुझाव था कि कला के इस खजाने को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुतीकरण के लिए एक सुलभ भवन में रखा जाए जो आम जनता के लिए सुगम व सुलभ हो। समिति के सुझावों पर सालारजंग संग्रहालय के स्वरूप ने मूर्त रूप ग्रहण किया।

समिति के एक सदस्य प्रसिद्ध कला समीक्षक डॉ. जेम्स काजिन्स को संग्रहालय के निर्देशक (आयोजक) के रूप में नियुक्त करने का निर्णय लिया गया जिन्होंने त्रावणकोर और मैसूर की कला दीर्घाओं का (आयोजन) निर्देशन भी किया था परन्तु इनकी व्यस्तता के कारण जी. वेंकटचलम को कला सलाहकार के रूप में नियुक्त किया गया। श्री वेंकटचलम के द्वारा ही संग्रहालय को कलात्मक स्वरूप में दीवान देवड़ी (सालारजंग तृतीय का आवासीय महल) में स्थापित किया गया। सन् 1951 को भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू द्वारा जनता के लिए खुला रखना घोषित किया गया। सन् 1961 में ससंद के एक अधिनियम के माध्यम से पुस्तकालय के रूप में संग्रहालय को राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया गया था। तत्पश्चात् संग्रहालय का प्रशासन एक स्वायत्त बोर्ड को स्थानान्तरित कर दिया गया था जिसके पदेन अध्यक्ष आंध्र प्रदेश के राज्यपाल थे। सालारजंग संग्रहालय को 1961 में संसद के एक अधिनियम द्वारा 'राष्ट्रीय महत्व' का संस्थान घोषित किया गया था। सालारजंग तृतीय का यह व्यक्तिगत संग्रह विभिन्न देशों से लायी गयी ऐतिहासिक व कलात्मक सामग्रियों से सम्पन्न था। यूरोपियन कला के संग्रह के लिये संग्रहालय प्रसिद्ध है जबकि वास्तव में भारतीय कला संग्रह उससे न केवल आकार वरन् विविधता और गुणवत्ता में श्रेष्ठ है।[8]

यहाँ पर संग्रहित वस्तुएँ विभिन्न देशों से लायी गयीं, जिनमें निम्नलिखित महाद्वीपों के अनेक देश सम्मिलित हैं।

(अ) अफ्रीका– लगभग 52 कलाकृतियाँ है जिनमें बारीकी से तराशी हुई हाँथी दाँत की वस्तुएँ, नाजुक चाँदी के बर्तन और एक रंगीन लकड़ी की मूर्ति शामिल है।

मिस्र– इस संग्रह में 144 वस्तुएँ शामिल हैं, जिन्हें नवाब मीर लाइक अली खान सालार जंग द्वितीय और मीर युसुफ अली खान सालार जंग तृतीय ने मिस्र की यात्राओं के दौरान प्राप्त किया था। यहाँ यह स्पष्ट किया जाना जरूरी है कि संग्रहालय में रखी अधिकांश मिस्र की कलाकृतियाँ मूल की प्रतिलिपियाँ है। जिनमें रानी नेफ़रत्तीति की प्रतिमा, तुंत अंक अमुन की प्रतिकृति, हाइरोग्लिफ़िक पैनल, कांस्य व हाथी दाँत की मूर्तियाँ ऑट ए डुबाल द्वारा बनाए गये दो तैल चित्र शामिल है।

(ब) अमेरिका – अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से नवाब सालारजंग ने दक्षिण अमेरिका के वेनेजुएला से 82 कलाकृतियाँ प्राप्त की जिनमें कटी हुई काँच की झाड़, फानूस, कैंडेंलाब्रा (मोमबत्ती स्टैण्ड), फूलदान, डिकैटंर (शराब की बोतले) आदि सम्मिलित है।

(स) एशिया– एशिया खंड में नवाब सालारजंग ने विभिन्न देशों से कलाकृतियाँ एकत्र की।

वर्मा– म्यांमार में 197 वर्मा कलाकृतियाँ संग्रह में है। जिनमें लकड़ी की नक्काशी, पर्दे, मेज, कुर्सियाँ, मंदिरों की मूर्तियाँ और बुद्ध की कांस्य प्रतिमाएँ शामिल है। ये उत्कृष्ट बौद्ध कला और कलाकारों की निपुर्णता को दर्शाती है। तारा देवी की चार हाथों वाली प्रतिमा और लाख चढ़ी वस्तुएँ इनमें विशेष आकर्षण का केन्द्र है।

चीन– नवाब सालारजंग चीन नही गये थे; लेकिन वहाँ की प्राचीन संस्कृति से प्रभावित होकर 3872 चीनी कलाकृतियाँ एकत्र कीं इसमें चीनी मिट्टी के बर्तन, कढ़ाईदार कपड़े, लाख के फर्नीचर, नक्काशीदार जेड, हाथी दाँत की नक्काशी, चाँदी के खिलौने और घरेलू वस्तुएँ शामिल हैं।

भारत– अपने पिता, दादा और पूर्वजों से मिलीं कलाकृतियों के अतिरिक्त मीर युसुफ अली खान सालारजंग तृतीय ने भारत के हर हिस्से से अपनी पसंद और रुचि के अनुसार वस्तुएँ एकत्रित की इनमें से कुछ प्रमुख स्थान है–आगरा, इलाहाबाद, औरंगाबाद, आदिलाबाद, अमृतसर, बनारस, बीदर, भुवनेश्वर बीड, कलकत्ता, कश्मीर कच्छ, काढ़ियावढ़ मद्रास, निजामाबाद सहारनपुर वारंगल आदि।

इस प्रकार सालारजंग संग्रहालय में 46000 से अधिक कला वस्तुएँ और 60000 मुद्रित पुस्तकें हैं। हालाँकि अनौपचारिक रूप से शिक्षित सालारजंग तृतीय ने 8000 पाण्डुलिपियों और 47000 मुद्रित पुस्तकों से युक्त एक विशाल पुस्तकालय का निर्माण कराया था। आज यहाँ 60,000 से अधिक मुद्रित पुस्तकें हैं।[9] संग्रहालय में संग्रहित दो सबसे अच्छी कृति पर्दानशी रेबेका (veiled Rebecca) जो एक संगमरमर की मूर्ति है, नक्काशी है जिसे 1876 में Neo classio नवशास्त्रीय इतावली मूर्तिकार Giovanni Maria Benzoni ने बनाया था।[10] घूँघट वाली यह रेबेका मूर्ति संग्रहालय का गौरव है जिसे सालारजंग प्रथम ने अपने यूरोपीय प्रवास के बाद भारत लाए थे और मार्गुराइट और मैफिस्टोफिल्स "Marguerite and Mephistopheles" की मूर्तियाँ डबल आकृति वाली लकड़ी की नक्काशी है जेड का उत्कृष्ट संग्रह यहाँ के मुख्य आकर्षण है संग्रहालय की पहली मंजिल पर 80 से अधिक मूल यूरोपीय पेंटिग प्रदर्शित है। कुछ प्रदर्शनियाँ जो आगंतुकों को मंत्रमुग्ध कर देती हैं वे हैं जापानी रेशमी चित्र, हाथ से लिखी लघु कुरान, धातु एवं हाथी दाँत से बुने हुए कालीन 300 चकने वाली छड़ी, अंग्रेजी शराब के गिलास, नूरजहाँ की कटार, जेड खम में जहाँगीर का शराब का प्याला और औरंगजेब की तलवार मुख्य आकर्षण केन्द्र बिन्दु है।

आज संग्रहालय के कला खंडों को कई खंडों में विभाजित कर एक विशेष दर्शनीय मंदिर के रूप में व्यवस्थित किया गया है। उनका विवरण यहाँ अलग–अलग अनुभागों के रूप में वर्णित है। यहाँ प्रदर्शित समस्त वस्तुओं को 38 से अधिक अनुभागों (गैलरियों) में बाँटा गया है। यह संग्रह न केवल भारतीय कला वरन् मध्य पूर्वी कला, चीनी कला और पश्चिमी कलाओं में बाँटा गया है। इसके अतिरिक्त प्रतिष्ठित सालारजंग परिवार के नाम पर एक विशेषगेलरी "संस्थापक गैलरी" भी समर्पित है।

https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI06.018

अनुभाग (गैलरी)

संग्रहालय में कला के पूरे संग्रह को उनकी अवधि और विशेषता के आधार पर 38 खंडों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक खंड एक विशेषता के आधार पर एक अनुभाग (गैलरी) बन गया है और आज तक इस संग्रहालय में सम्पूर्ण कला संग्रह को तीन विशेष खंडों में विभाजित किया गया है, अर्थात् भारत से संबंधित संपूर्ण कला संग्रह 'केंद्रीय भवन' में है, पश्चिमी देशों से संबंधित संपूर्ण कला संग्रह 'पश्चिमी ब्लॉक' में है और पूर्वी देशों से संबंधित संपूर्ण कला संग्रह 'पूर्वी ब्लॉक' में है जहाँ लगभग 13,654 कलाकृतियाँ प्रदर्शित की गई।

संग्रहालय के मुख्य भवन की संरचना में तीन मुख्य ब्लाक इस प्रकार हैं। पहला ब्लाक 'केन्द्रीय भवन' भू–तल (ग्राउण्ड फ्लोर) पर है, जिसमें करीब 27 गैलरियाँ (सेक्शन) स्थापित किए गए हैं इन अनुभागों का निर्माण अलग–अलग कमरों के साथ किया गया था। दूसरा ब्लॉक पश्चिमी ब्लॉक (7 गैलरी) और तीसरा मुख्य ब्लॉक पूर्वी ब्लॉक (4 गैलरी) के साथ है।

- भारतीय संग्रह में तेलंगाना, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल, उड़ीसा पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र पंजाब, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, जम्मू–कश्मीर, कांगड़ा, बहसोली, जयपुर, उदयपुर, मेवाड़, हेदराबाद, गोलकोंडा, बीजापुर, कर्नूल और निर्मल स्थान की वस्तुएँ है, भारतीय कला वस्तुओं में पत्थर की मूर्तियाँ, कांस्य, लकड़ी की नक्काशी, लघु चित्र, आधुनिक चित्र, हाथी दांत, हरे पत्थर (जेड नक्काशी) कपड़ा, धातु के बर्तन, पांडुलिपियाँ, बीदरी, हथियार और कवच, उपयोगी बर्तन आदि शामिल है।[11]
- पश्चिमी संग्रह में इंग्लैंड, आयरलैण्ड, फ्रांस, बेल्जियम, इटली, जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया, वेनिस और ऑस्ट्रिया की वस्तुएँ प्रदर्शित है।
- पूर्वी संग्रह में चीन जापान, बर्मा, कोरिया, नेपाल, थाईलैण्ड इण्डोनेशिया और मध्य पूर्व देशों में मिस्र, सीरिया, फ्रांस और अरब जैसे देशों की वस्तुएँ शामिल है।

अर्थात् क्रमशः फाउंडर्स गैलरी अनुभाग, दक्षिण भारतीय कांस्य और पैमेड टेक्सटाइल अनुभाग, दक्षिण भारतीय अनुभाग की मियर आर्ट्स। भारतीय मूर्तियाँ अनुभाग, भारतीय कपड़ा अनुभाग, आइवरी ऑब्जेक्ट अनुभाग, जेड गैलरी अनुभाग, भाारतीय लघु पेंटिंग अनुभाग, (भारतीय मॉडेम) पेंटिंग अनुभाग, 20 बिदरी (गैलरी) अनुभाग आदि अनुभाग हमें दिखाई देते हैं। निदेशकों ने दर्शकों की सुविधा के लिए इन सभी अनुभाग को अलग–अलग कमरों में व्यवस्थित किया है।

सालार जंग संग्रहालय ब्लॉक विभाजन

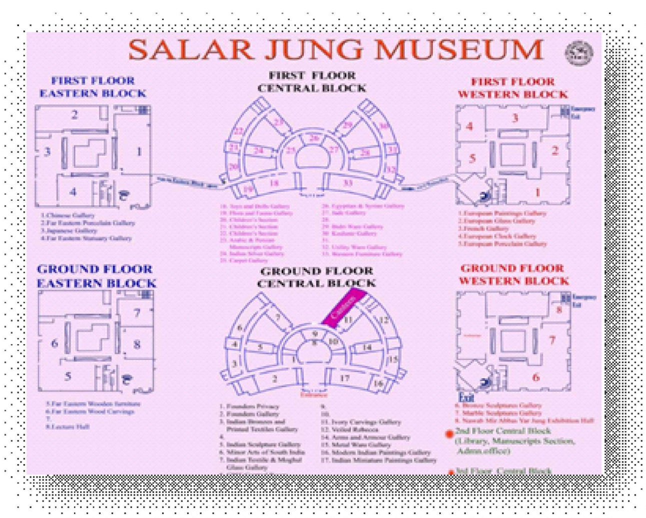

कमरा नंबर 1 और 2 (संस्थापक गैलरी)

यहाँ प्रदर्शित कई तस्वीरें सालारजंग के जीवन की महिमा और घटनाओं को दर्शाती हैं। यह खंड सालारजंग के परिवार के चित्रों, चित्रों और उनके समय से संबंधित अन्य वस्तुओं के माध्यम से श्रृद्धाजंलि देने के लिए बनाया गया है।"

कमरा नं0 3 : (भारतीय कांस्य और चित्रित वस्त्र गैलरी)

यही प्रारम्भिक पल्लव काल की भगवान विष्णु और सबसे बड़े नटराज की मूर्तियाँ देखने लायक हैं। इसके अलावा, विभिन्न मुद्राओं में भगवान शिव की एक मूर्ति इस परिसर की शोभा बढ़ाती हैं। 12वीं शताब्दी ईस्वी की कुछ अन्य चोल काल की कलाकृतियाँ भी यहाँ प्रदर्शित हैं। सूती वस्त्रों से बने आवरण (Screen) जो घरों और मंदिरों में प्रयुक्त होते हैं यहाँ प्रदर्शित है। कुछ वस्त्रों पर धार्मिक कहानियाँ आयताकार में चित्रित हैं।

कमरा नंबर 5 : (भारतीय मूर्तिकला गैलरी)

संग्रहालय में पत्थर की मूर्तियों का संग्रह बहुत कम है, फिर भी वे काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि वे भारत में प्रचलित विभिन्न शैलियों की विशिष्ट विशेषताओं को दर्शाते हैं। गैलरी में नेलाकोंडा पल्ली से प्राप्त तीसरी शताब्दी ईस्वी की बुद्ध की एक उत्कृष्ट खड़ी मूर्ति प्रदर्शित की गयी है। नाग सैय्या पर लेटे हुए शेष साई विष्णु की आकृति का कतीय काल का एक अच्छा उदाहरण है।

कमरा नं. 4 और 6 : (दक्षिण भारतीय गैलरी)

हमारा देश की काष्ठकला और हस्तशिल्प कला के नमूने यहाँ प्रदर्शित है।इस गैलरी में आगंतुक लकड़ी की नक्काशी देख सकते हैं परन्तु गैलरी के प्रमुख भाग में दक्षिण भारतीय लकड़ी की नक्काशी है।

कमरा नं. 7 : (भारतीय कपड़ा और मुगल ग्लास गैलरी)

यहाँ बहुधा तीन से पाँच मीटर (Ten 15 feet long) लम्बे वस्त्रों पर आयताकार में कलमकारी की गयी है जिसमें लाल, हरे, सफेद और नीले प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया गया है ये कलमकारी वाले पटचित्र लम्बे–लम्बे खर्रे (Scroll) लपेट कर रखे जाते थे और प्राचीन समय में कहानी सुनाने वाले भ्रमणकारी इन्हें प्रदर्शित करते समय धार्मिक गीत, कहानी, महाकाव्य, जिस पर ये चित्र आधारित होते थे, उन्हें गाया करते थे। इस गैलरी में प्रदर्शित ये पटचित्रों के खर्रे (Scroll) कहानी सुनाने (कहने) के नाटकीय एवं जीवनप्रद महत्वपूर्ण प्रभावों को प्रतिबिम्बित करते हैं।[12]

कमरा नं. 8, 9 और 10 : (बच्चों की गैलरी)

बच्चों के अनुभाग में विभिन्न प्रकार के खिलौने उपलब्ध हैं यहाँ का एक खास आकर्षण यह है कि ट्रेन पटरियों पर चलती हैं।

कमरा नं. 11 : (आइवरी नक्काशी गैलरी)

ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान भारत में हाथी दाँत की नक्काशी बहुत प्रतिष्ठित कला थी, इसके कारण भारत में जंगली हाथियों की जनसंख्या में बहुत गिरावट आयी। प्राचीन मैसूर राज्य (अब कर्नाटक) और केरल राज्य हाथी दाँत की नक्काशी के परम्परागत केन्द्र थे।

कमरा नं. 12 : (पर्दा रेबेका गैलरी)

घूँघट पहने हुए रेबेका की मूर्ति इस गैलरी का मुख्य आकर्षण है। सफेद संगमरमर की मूर्ति, उत्तम शिल्प कौशल का एक प्रमाण कहा जाता है कि इटालियन मूर्तिकार जियोवानी बतिस्ता बेंजिनी ने इसे 1876 में डिजाइन किया था। घूँघट वाली इस संगमरमर की मूर्ति की सुंदरता से चकित, सालारजंग प्रथम ने 1876 में ही अपनी इतावली यात्रा में इस मूर्ति को खरीदा था।[17] 19वीं सदी के अंत में इसे हैदराबाद संग्रहालय में प्रवेश मिला। यह मूर्ति संग्रहालय में दर्शकों के लिए एक बड़े आकर्षण के रूप में देखी जाती है।

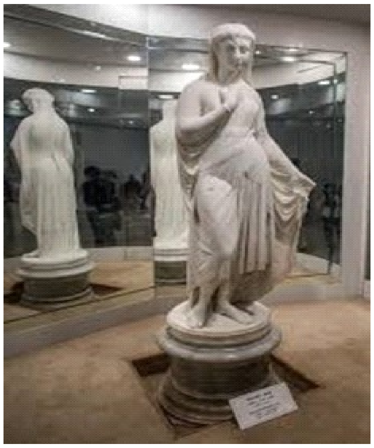

कमरा नं. 14 (हथियार और कवच गैलरी)

इस खंड में विभिन्न प्रकार की तलवारें, ढालें, धनुष, चाबुक, तीर, कुल्हाड़ी और विभिन्न प्रकार के कवच देखने को मिलते हैं। प्रदर्शनी में टीपू सुल्तान के काल की तलवारें, सुल्तान अबुल हसन और अब्दुल्ला कुतुब षाही द्वारा इस्तेमाल की गई तलवारें विशेष आकर्षण का केन्द्र हैं।

कमरा नं. 15 : (धातु के बर्तन गैलरी)

इस गैलरी में विभिन्न प्रकार की धातु की वस्तुएँ और मंदिरों की देवी–देवताओं की मूर्तियाँ, घर की सजावट के सामान आदि प्रदर्शित किए गए हैं।इस खंड में भारी धातु की वस्तुओं और बर्तनों को उनके उत्कीर्णन कौशल के साथ देखा जा सकता है।

कमरा नं. 16 : (भारतीय आधुनिक पेंटिंग गैलरी)

यह खंड कलाकार की आधुनिक कलात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करता है। इस खंड में, केरल सुंदरी की अद्भुत कृति, जो राजा रवि वर्मा द्वारा चित्रित की गई हैं, कलाकारों को आकर्षित करती है। के.एच. आरा, गायतोंडें, रवीन्द्र नाथ टैगोर की चित्र सहजता, एम.एफ. हुसैन की सुंदर यहाँ कला प्रदर्शित है।

कमरा नं0 17 (भारतीय लघु चित्र गैलरी)

सालारजंग संग्रहालय की 17वीं कलाविथिका न केवल भारतीय लघु कला का व्यापक अवलोकन प्रस्तुत करती है बल्कि कला की अनूठी शैलियों का भी अवलोकन कराती है। यहाँ प्रदर्शनी में दक्कन क्षेत्र की लघु कला की भव्यता को इस विशेष कक्ष में देखा जा सकता है। सुल्तान तगुचित्रा कला के संरक्षक थे और इसलिए इसे ढाका शैली के उदाहरण के रूप में एक विशेष खंड में देखा जा सकता है।

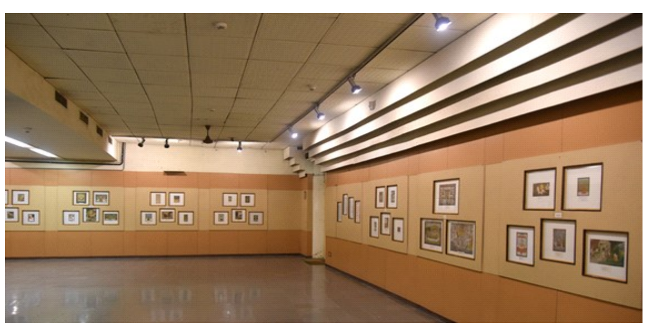

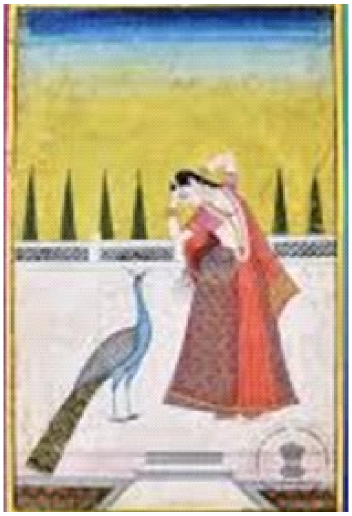

दक्कन लघु चित्रों में एक विशेष सौंदर्य और लालित्य होता है। विशेषकर दक्कन क्षेत्र के विशिष्ट परिदृश्यों में। फलों से लदे आम के पेड़, गिलहरियाँ, तोते, ताड़ के पेड़, पहाड़ी ढलान है। सभी इन चित्रों में देखे जा सकते हैं। इस सबसे परे, ढाका पेंटिंग्स की एक अनूठी रंग योजना है। अहमद नगर, बीजापुर, गोलकुंडा, बीदर और बेरारू के सुल्तानों की चित्रकला शैली के उदाहरण इस खण्ड में मौजूद हैं, जिन्होंने दक्कन क्षेत्र पर शासन किया था।

कमरा नं. 18 (मूर्ति गैलरी)

यह अनुभाग विशेष रूप से लकड़ी की मूर्तियों, धातु की मूर्तियों, जानवर, गवाह, फल, सब्जियाँ और अन्य कोंडापल्ली मूर्तियाँ जो हमारी संस्कृति का प्रमाण है। दर्शकों को आनंद के साथ–साथ ज्ञान भी प्रदान करती है।

कमरा नं. 19 : (वनस्पति एवं जीव गैलरी)

इस खंड में बंटू और वनस्पतियों की विभिन्न प्रजातियों से संबंधित विभिन्न प्रकार की कलाकृतियाँ प्रदर्शित की गई हैं।

कमरा नं. 23 : (अरबी और फारसी पाण्डुलिपियाँ गैलरी)

प्राचीन पाण्डुलिपियाँ मानव जाति के इतिहास, उनके दर्शन, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन, उपलब्धियों, विफलताओं आदि के बारे में जानने में बहुत मदद करती हैं। इसमें 9000 पाण्डुलिपियाँ हैं और 215 प्रतियाँ विशेष रूप से चित्रों के साथ विभिन्न भाशाओं में लिखी गई हैं। इतिहास के अमूल्य एवं अत्यन्त महत्वपूर्ण प्राचीन ऐतिहासिक ग्रंथ यहाँ संरक्षित हैं।

कमरा नं. 24 : (इंडियन सिल्वर गैलरी)

भारत में चांदी के साथ कई सामान्य वस्तुएं भी हैं जिनका नाम जरीगेटिस है। प्लेटें, कटोरे, पंचा आदि जैसी वस्तुएँ नवाब मीर अली खान अर्थात् तृतीय सालार जंग बहादुर द्वारा देश के विभिन्न क्षेत्रों से एकत्र की गई चाँदी की वस्तुएँ यहाँ संरक्षित की गईं।

कमरा नं. 25 : (कालीन गैलरी)

हमारे प्राकृतिक संसाधनों से बने भारतीय कालीनों का हुनर हमें इस खंड में दिखता है।

कमरा नं. 26 : (मिस्र और सीरियाई गैलरी)

इस खंड में मिस्र और सीरियाई कलाकृतियों की एक विस्तृत विरासत प्रदर्शित है।

कमरा नं. 28 : (जेड गैलरी)

इस खंड में रत्न जड़ित वस्तुओं का संग्रह मूल्यनवान पत्थर की नक्काशी को दर्शाता है। यह दर्शकों को आश्चर्यचकित कर देता है की शाहजहाँ की तलवार और जहाँगीर व नूरजहाँ काल की शाही पोशाकें प्रदर्शन पर हैं।

कमरा नं. 29 : (बिदरी गैलरी)

इस खंड में बिदरी का काम देखने को मिलता है। बिदरी कला हैदराबाद शहर के पास बीदर क्षेत्र की एक कला है और यह एक प्रकार की पेंटिंग है जो बर्तनों या वस्तुओं पर लेप या सजावट के रूप में की जाती है। इस कला की उत्पत्ति फ्राँस, सीरिया और मिस्र में हुई जो इन क्षेत्रों को विरासत में मिली है। धीरे–धीरे यह कला पूरे भारत के दक्कन क्षेत्र में व्यापक रूप से फैल गई। यह कागज पर हाथ से लिखने जैसा है ये बहुत ही खूबसूरत पेंटिंग है।

कमरा नं. 30 : (कश्मीर गैलरी)

इस खंड में जम्मू कश्मीर के हस्तशिल्प का इतिहास दिया गया है। पेपर मेशी आइटम के साथ रंगों में आकर्षक फूलदान, छोटी कटोरियाँ और अन्य सजावटी सामान नजर आ रहे हैं। यह कश्मीरिज़ल सभी वस्तुओं में सबसे प्रसिद्ध है। एक शॉल या सिर का एक टुकड़ा जैसे महिलाओं का निशान या कंगल को पूरा करने में महीनों लग जाते हैं।

कमरा नं. 32 : (यूटिलिटी वेयर गैलरी)

विशेषज्ञ कारीगरों ने तांबे और कांस्य के उच्च कलात्मक कौशल में महारत हासिल की है और खुदाई में निकली वस्तुओं को इस गैलरी में देखा जा सकता है। जैसे कि हड़प्पा की खुदाई से प्राप्त तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व की नृत्य करती हुई लड़की की कांस्य प्रतिमा उच्च स्तरीय कलात्मकता का प्रमाण है।

कमरा नं. 33 : (पश्चिमी फर्नीचर गैलरी)

इस खंड में पश्चिम के मिट्टी के बर्तनों का संग्रह है। यहाँ कुर्सियाँ, मेज और अन्य घरेलू सामान देखने को यहाँ मिलता है। यहाँ हम पश्चिम की लकड़ी की सामग्री और सजावटी वस्तुओं की कलात्मक शैली देखते हैं।

कमरा नं. 34 : (पश्चिमी पेंटिंग एवं कांस्य मूर्तियाँ गैलरी)

यहाँ प्रदर्शित एक मूर्ति की खासियत यह है कि इसमें एक आदमी को एक हाथ में लालटेन और दूसरे हाथ में तलवार पकड़कर रात में निगरानी करते हुए दिखाया गया है। पश्चिमी की शिल्प कौशल का यह एक प्रमाण है।

कमरा नं. 35 : (वेस्टर्न ग्लास गैलरी)

इस श्रेणी में विभिन्न प्रकार के बर्तन, घरेलू सामान, कांच के बर्तन और विभिन्न प्रकार की काँच की कलाकृतियाँ यहाँ प्रदर्शित हैं।

कमरा नं. 36 : (फ्रेंच गैलरी)

इस खंड में हम फ्रांसीसी देशी कला और अन्य कारीगरी का सामान देखते हैं।

कमरा नं. 37 : (वेस्टर्न क्लॉक गैलरी)

इस खंड में यूरोपीय देशों की घड़ियों की कलात्मक आकृतियाँ देखी जा सकती है। यहाँ पीरियड घड़ियों से लेकर 19वीं सदी की घड़ियाँ तक मिल जाएंगीं इस अनुभाग में घड़ियों की कार्यप्रणाली देखी जाती है।

कमरा नं. 38 : (पश्चिमी चीनी मिट्टी गैलरी)

इस खंड में यूरोपीय देशों की विभिन्न प्रकार की चीनी मिट्टी की वस्तुएँ प्रदर्शित की गई।

लैक्चरर हॉल

यहाँ एक व्याख्यान कक्ष भी है व्याख्यान कक्ष एक अनूठा इतिहास कहता है। अब तक इसमें न जाने कितनी बैठकें, सम्मेलन, व्याख्यान, चर्चाएँ, अनेक सम्मान एवं प्रार्थनाएँ हो चुकी हैं यहाँ आने वाले सभी लोगों को यह भी आकर्षित करता है।

पुस्तकालय

यहाँ का पुस्तकालय भी आधुनिक पद्धतियों एवं सुविधाओं से सुसज्जित है। विशेष आगंतुकों के लिए कैंटीन जैसी आवश्यक सुविधाओं के साथ, सालारजंग संग्रहालय वर्तमान पीढ़ी के लिए भारतीय कला के वैभव और ज्ञान को प्रस्तुत करता है और वर्तमान पीढ़ी को भारतीय इतिहास और अतीत की संस्कृति के साथ–साथ कला के बारे में सूचित करता है जो उस समय के समाज से जुड़ी हुई थीं।

निष्कर्षत

सालारजंग संग्रहालय भारत में सबसे बड़ा माना जाता है। इसे एक अकेले व्यक्ति, नवाब मीर यूसुफ अली खान तृतीय सालारजंग द्वारा एकत्र की गई प्राचीन कलाकृषतियों का दुनिया का पहला संग्रहालय माना जाता है। पूरे भारत से एकत्रित ये कलाकृतियाँ पहली शताब्दी की सभ्यताओं के मूल्यों और उस समय के मानवीय जीवन के तरीकों को दर्शाती हैं।

संदर्भ

1. Alexander, Edward Porter, Alexander, Mary - Museums in Motion : An Introduction to the History and functions of Museums, Rowman Altamira Publication 2008, Pg. **1**
2. How many museums are there in the world ICOM web archive. org. 4 Dec. 2020
3. studyhub.net in from Internet.
4. सालारजंग संग्रहालय लेख – https://wikipedia.org.
5. Salar Jung Meseum, Hyderabad - Article from site https://www.salarjungmuseum.in
6. Luther, Narendra - Hyderabad a city in history, sangam Books, 1995, Pg. **65**
7. Salarjung Museum guide Book publised by Salarjung Museum, 1998, Pg. **4-5**
8. Salararjung Museum (Ministryof Culture government of India) article from site.
9. Punja, Shobita - An Illustrated guide to Museums of India, The guidebook company Limited, Hong Kong, 1990 Pg. **193**
10. Luther Narendra - Hyderabad a city in hisstory, Sangam Book, 1995, Pg. **67**
11. सालारजंग संग्रहालय, भारतीय संस्कृति लेख – https://Indianculture.gov. in
12. Punja, Shobita - An Illustrated guide to Museums of India, The guidebook company Limited, Hong Kong, 1990 Pg. **194**